क्रुधद्रुहेर्ष्यार्थानां यं प्रति कोपः

√क्रुध् ,√द्रुह्, √ईर्ष्य्, √असूय्, धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थ वाले धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसमें चतुर्थी होती है-

यथा - पिता पुत्राय क्रुध्यति (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)।

दुष्टा: सज्जनेभ्यो द्रुह्यन्ति (दुष्ट सजनों से द्रोह करते हैं)।

गोविन्दः मह्यम् ईर्ष्यति (गोविन्द मुझसे ईष्या करता है)।

खलः सज्जनाय असूयति (दुष्ट सजन में ऐब निकालता है)।

सीता रावणाय अकुप्यत् ।।

क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म

जब √क्रुध् तथा √द्रुह् उपसर्ग सहित होती हैं तब जिसके प्रति क्रोध या द्रोह किया जाता है वह कर्म संज्ञक होता है सम्प्रदान नहीं,

यथा - गुरुः शिष्यं संक्रुध्यति ।

साधुः क्रूरमभिक्रुध्यति संद्रुह्यति वा ।

प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता

प्रति और आ पूर्वक √श्रु धातु के साथ प्रतिज्ञा करनेवाले कर्त्ता में चतुर्थी होती है,

यथा-राजा विप्राय गां प्रतिशृणोति, आशृणोति वा (राजा ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है)।

का इसमें ऐसा अर्थ भासित होता है कि ब्राहाण ने ही पहले 'मुझे गाय दो' ऐसा कहा होगा तब राजा ने प्रतिज्ञा की होगी।)

परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम

परिक्रयण में जो करण होता है वह विकल्य से सम्प्रदान होता है, "परिक्रयण' का अर्थ है निश्चित काल के लिए किसी को वेतन पर रखना

यथा – शतेन शताय वा परिक्रीतः।

तुमर्थाच्च भाववचनात्

तुमुन् (तुम्) प्रत्यय जोड़ने से किसी धातु में जो अर्थ निकलता है (यथा गन्तुम्, पठितुम् आदि) उसको प्रकट करने के लिए उसी धातु से बनी हुई भाववाचक संज्ञा का प्रयोग करने पर उसमें चतुर्थी होती है,

यथा - दानाय (दातुम्) धनमर्जयति। (दान के लिए धन कमाता है)।

यहाँ पर 'दान' 'दा' धातु से बना भाववाचक शब्द है 'दा' धातु में 'तुमुन्' जोड़ने से 'दातुम् बनता है जिसका अर्थ 'देने के लिए' होता है, इसी अर्थ को प्रकट करने के लिए 'दान' भाववाचक शब्द में चतुर्थी हुई है। इसी प्रकार -

उत्थानाय (उत्थातुं) यतते ।

देवदत्तः यागाय (यष्टुम्) याति।

स्नानाय गङ्गातटं याति अथवा स्नातुं गङ्गातटं याति ।

क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः